कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में :- ----------

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन...

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... कूटांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 154/2015

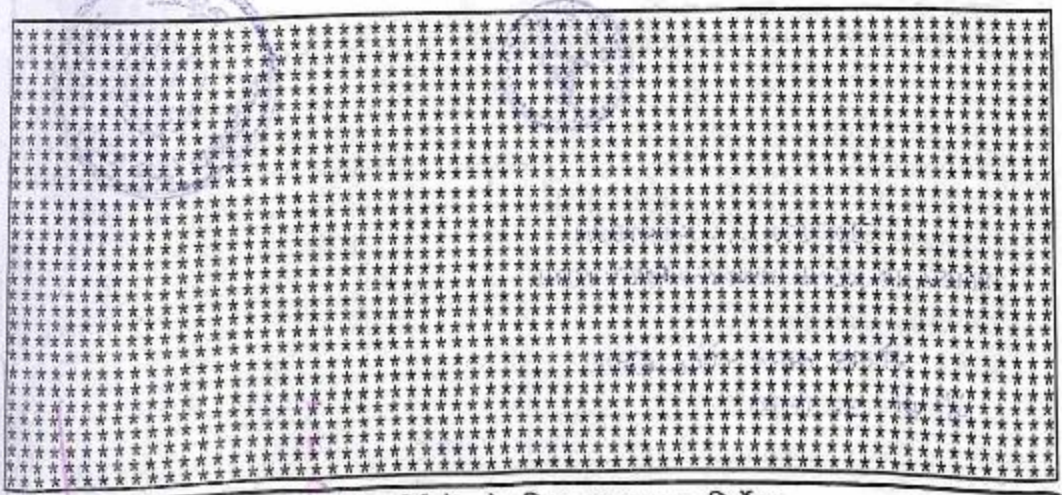

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तकें, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि, किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ काम उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोडकर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. (क) शीर्षक :- 'स्वावलम्बन का महत्त्व'

(ख) यदि हमारे मन मे अपना कार्य करने का उत्साह नही है, अपने ऊपर विश्वास नही हैं, आलस्य ने हमारे जीवन को पंगु बना दिया है तो व्यक्ति समाज के लिए भार बन जाता हैं।

(ग) समाज की प्रगति स्वावलम्बन, कर्मण्यता, स्वयं के सहारे जीने, अनालस्य, मेहनत, सहयोग भावना, उत्साह, युवको, इत्यादि पर निर्भर करती हैं।

(घ) महापुरुषो ने स्वावलम्बन के अमृत को पीकर तथा स्वावलम्बन की पूजा कर अपने जीवन को सफल बनाया हैं।

(क) शीर्षक :- "स्वतंत्रता के सैनिकों का दायित्व या युद्ध की रणभेरी। या पथ भूल न जाना पथिक"

(ख) युद्ध की रणभेरी सुन सैनिक पुलकने लगे, वे युद्ध के लिए जाने को तैयार हो गए। वे अपने मातृभूमि के कर्त्तव्य के प्रति सचेत हो गए।

(ग) कर्त्तव्य प्रेम की उलझन से कवि का आशय है कि सैनिको को युद्धभेरी सुनने पर वे सोच रहे है कि मातृभूमि के कर्त्तव्य का पालन करे फिर परिवार के प्रति कर्त्तव्य का पालन करे।

(घ) जब स्वदेश बलिदान माँग रहा हो तो हमे अपने को बलिदान के लिए तत्पर करना चाहिए साथ ही

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(घ)

2. अन्य लोगो को भी बलिदान के लिए प्रेरित करना चाहिए कदापि युद्ध मे जाने से घबराना नही चाहिए। अपने अपने देश के प्रति कर्त्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा से करना चाहिए।

5. (क) वाक्य मे प्रयुक्त क्रिया 'सकर्मक क्रिया' है।

उत्तर 5. परिभाषा :-
वह क्रिया जिसमे कर्म दिया हुआ हो अर्थात, क्रिया के व्यापार व कार्य का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े।
उदाहरणार्थ :- वाक्य मे देना क्रिया का प्रभाव अमित (कर्त्ता) की बजाय अजय (कर्म) पर पड़ रहा है।

(ख) (i) महात्मा गाँधी :- व्यक्तिवाचकसंज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, बोलते वे क्रिया के कर्त्ता इत्यादि।

(ii) बोलते वे :- अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, महात्मा गाँधी कर्त्ता की क्रिया इत्यादि।

(ग) रचना की दृष्टि से वाक्य भेद :- (तीन प्रकार)

(i) सरल वाक्य :-
वह वाक्य जिसमे एक ही उद्देश्य व एक ही विधेय हो, सरल वाक्य कहलाता है
जैसे - राम पढता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) संयुक्त वाक्य :-
वह वाक्य जिसमे दो या दो से अधिक सरल या मिश्र वाक्य किसी संयोजक अव्यय (और, या, अथवा, परंतु, किंतु, तथा) इत्यादि से जुड़े हुए हो।
जैसे :- राम पढ़ता है किंतु श्याम खेलता है।

(iii) मिश्र वाक्य :-
वह वाक्य जिसमे एक प्रधान उपवाक्य व एक या दो या अधिक आश्रित उपवाक्य हो, मिश्र वाक्य कहलाता है।
जैसे :- रेखा उमाकान्त की बड़ी बहिन है जो विवेकविहार में रहती है।

5. (a) (i) नौ दो ग्यारह होना :- भाग जाना
वाक्य प्रयोग :-
पुलिस को देखकर चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

(ii) काला अक्षर भैंस बराबर :- बिल्कुल निरक्षर या अनपढ़
वाक्य प्रयोग :-
बुजुर्ग महिलाएं अभी भी हस्ताक्षर नहीं कर पाती है, इससे काला अक्षर भैंस बराबर की लोकोक्ति चरितार्थ होती है।

(b) पंक्ति में 'अनुप्रास अलंकार' है।
परिभाषा :- वह काव्य जिसमे वर्णो की आवृत्ति हो चाहे स्वरो की समानता हो विषमता वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

परीक्षार्थी उत्तर

6. (क) फसल के पैदा होने मे निम्न तत्वो का योगदान होता है :-
(i) नदियो के पानी का प्रभाव (ii) मानव -श्रम विभिन्न मिट्टियो के गुणधर्म (iii) सूरज की किरणो का प्रभाव (iv) हवा की थिरकन का प्रभाव (v) प्रकृति के (vi) अन्य तत्वों का इत्यादि।

(ख) खेतो की लहलहाती फसल को देखकर मानव के मन मे एक सुखदायक, अद्भुत व संतोषजनक चित्र उभरता है। इस फसल को देखकर मानव - मन प्रफुल्लित हो उठता है। एक नयी चेतना व जोश का संचार हो जाता है। इसके अतिरिक्त प्रकृति की शोभा व एक प्राकृतिक छवि को देखकर मानव मन उल्लासित हो उठता है।

7. (क) जब कृष्ण ने मथुरा जाने के बाद उद्धव के माध्यम से योग संदेश भेजा तो गोपियो ने निम्न प्रतिक्रिया की :-
(i) वे व्यथा पर पड़ गई कि श्रीकृष्ण स्वयं नही आ रहे हैं। इससे उनका मन उदास हो गया।
(ii) वे श्रीकृष्ण से योग संदेश की बजाय प्रेम संदेश की आशा कर रही थी व योग संदेश पाकर वे व्यथित हो उठी।
(iii) उन्होने क्रोध मे उद्धव को व्यंग्य वचन कहे।
(iv) उन्होने श्रीकृष्ण पर राजनीति पढ आने अर्थात, छल- कपट सीख आने का दोषारोपण भी किया।
(v) उन्होने श्रीकृष्ण को राजधर्म पालन के लिए भी कहा।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

7\. (ग) कवि गिरिजाकुमार माथुर ने कविता 'छाया मत छूना' माध्यम से यह संदेश दिया हमे कभी भी पुरानी यादो (स्मृतियो) को याद नही करना चाहिए चूंकि ये वर्तमान के यथार्थ का सामने करने से रोकती है व साथ ही भविष्य वरण को भी हतोत्साहित करती हैं।
कवि गिरिजाकुमार माथुर ने कहा कि पुरानी स्मृतियाँ को याद करना मृगतृष्णा की तरह है इसलिए कभी भी स्मृतियों को नही याद करना चाहिए।
इसके अतिरिक्त कवि ने यथार्थ का सामना, छाया छूने से परहेज, भविष्य वरण, मृगतृष्णा का अनुभव न करने को भी संदेशित (इंगित) किया हैं।

(घ) राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद के माध्यम से कवि तुलसीदास ने मनुष्यों को निम्न जीवन - मूल्यो को अपनाने का संदेश दिया हैं:-

(i) हमे कदापि परशुराम की तरह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से मना किया है अन्यथा अपमान झेलना पड़ता है।

(ii) हमे राम की तरह शीतल, संतोषजनक, विनयता, सदाचार, बड़ो की इज्जत जैसे जीवन - मूल्य अपनाने चाहिए।

(iii) लक्ष्मण की तरह कदापि अपने वरिष्ठजन पर क्रोध या आक्षेप नही करना चाहिए।

(iv) विश्वामित्र की तरह सदा शीतलता पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

(v) शूरवीर बनने की डींग न हांकर वास्तव मे युद्धभूमि का वीरता का परिचय देना चाहिए।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर | परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

8. (क) रेखांकित पंक्ति भाव है कि चाँद हमे प्यारी राधा का प्रतिबिंब लगता मानो कि चाँद राधिका की परछाई हो यहाँ व्यतिरेक अलंकार को प्रयुक्त किया है जिसके अनुसार राधा की सुन्दरता व उज्ज्वलता की तुलना मे चाँद की सुंदरता व उज्ज्वलता को तुच्छ बताया है।

(ख) दूधा को सो फेन से कवि का आशय है कि चाँदनी रात की उज्ज्वलता हमे दूधा के झाग की तरह दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त यहाँ चाँदनी रात को दूधा के से फेन की उपमा दी गई है।

(ग) सुन्दर चाँदनी से आकाश का स्वरूप निम्न प्रकार दिखाई देता है:-
(i) स्फटिक शिला (ii) दूधा को सो फेन
(iii) उदधि अदधि (iv) एक स्वच्छ दर्पण
(v) राधा का प्रतिबिंब

(घ) आरसी से अंबर से मे आभा सी उजारी लगे चाँदनी रात व उसकी उज्ज्वलता के लिए प्रयुक्त हुआ है।
इस पंक्ति मे कवि कहना चाहता है कि चाँदनी रात हमे एक शुभ व स्वच्छ दर्पण के समान प्रतीत होती है।

प्रश्न संख्या — परीक्षार्थी उत्तर

9. (क) हवलदार साहब के दुःखी होने के कारण था कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस की बिना चश्मे वाली मूर्ति अब बिना चश्मे के ही रहेगी क्योंकि कैप्टेन की मृत्यु हो चुकी है व मास्टर चश्मा बनाना भूल गया। इस प्रकार हवलदार साहब के दुःखी होने का कारण 'कैप्टेन की मृत्यु' थी।

(ख) हवलदार साहब मे नही रुकना चाहते थे क्योंकि अब कैप्टेन की मृत्यु हो चुकी थी व अब नेताजी की मूर्ति बिना चश्मे के ही रहेगी यह बात नेताजी को व्यथित कर रही थी व इसी कारण हवलदार साहब रुकना नहीं चाहते थे।

10. (क) बालगोबिन भगत का रेखाचित्र निम्न प्रकार रूढ़ियो पर प्रहार करता है:-

(i) बालगोबिन भगत अपने पुत्र की मृत्यु पर पुत्र के शव को अपनी पतोहु से आग दिलाकर पुरानी रूढ़ियो को खंडित करते हैं।

(ii) वे विधवा विवाह के भी समर्थक है वे अपनी पतोहु को पुनर्विवाह के लिए उसके मायके भेज देते हैं।

(iii) वे अपने पुत्र की मृत्यु पर शोक मनाने की बजाय आनंद की अनुभूति करते है जो पुरानी रूढ़ियो के विरुद्ध है।

(iv) वे अपने पुत्र की मृत्यु पर विरहणी पतोहु को भी खुशी मनाने के लिए कहते है जो पुरानी रूढ़ियो को खंडित करता है।

परीक्षक द्वारा प्रयुक्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

10. (ख) फादर कामिल बुल्के को निम्न कारणों से भारतीय मानव संस्कृति के अभिन्न अंग कहा है:-

(i) फादर कामिल बुल्के बेल्जियम में जन्मे थे फिर भी वे भारत में आकर बस गए।

(ii) फादर कामिल बुल्के ने कोलकाता के विश्वविद्यालय में ही हिन्दी व अंग्रेजी का अध्ययन किया।

(iii) बाद में उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया।

(iv) वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए तत्पर थे।

(v) वे रामकथा: उत्पत्ति व विकास के बारे में अपने मत प्रस्तुत किये।

(vi) वे एक हिन्दू संस्कृति को अधिक महत्त्व देते थे। उन्होंने बाइबिल व ब्लू बर्ड का हिन्दी रूपांतरण किया।

(vii) उन्होंने हिन्दी - इंग्लिश डिक्शनरी लिखी।

10. (ग) लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्राचीन व नवीन शिक्षा प्रणाली में निम्न अंतर बताया है:-

(i) प्राचीन शिक्षा गुरुकुलों में होती थी जबकि नवीन शिक्षा विद्यालयों / विश्वविद्यालयों में होती है।

(ii) केवल राजकुमार ही प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा पाते थे जबकि नवीन शिक्षा प्रणाली में सभी को शिक्षा का अधिकार है।

(iii) प्राचीन शिक्षा प्रणाली में आधुनिक शिक्षा तकनीकों का उपयोग नहीं होता है।

(i) प्राचीन शिक्षा प्रणाली में एक निश्चित आयु तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाते थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

11. (क)

'नेताजी का चश्मा' पाठ मे देशभक्ति अपनाने का संदेश दिया हैं। हमे किसी देशभक्त को उसकी शारीरिक अक्षमता के कारण उपहास का पात्र नही बनाना चाहिए। नेताजी का चश्मा पाठ मे देशभक्त व देशभक्ति का पूर्ण सम्मान करने का संदेश दिया हैं। नेताजी का चश्मा पाठ मे लेखक ने हमे देशभक्ति के प्रति अधिक जागरुक बनने का संदेश दिया हैं। यह भी संदेश है कि देशभक्ति किसी सेना मे व युद्ध मे भाग लेने से व्यक्त नही होती बल्कि छोटे-2 कार्यो से व्यक्त होती हैं।

(ख) यह कथन सत्य है कि नियमित व सच्चे मन मन से की गई प्रार्थना अवश्य फलदायी होती है क्योंकि यह हमारी तीव्र इच्छा (मनोकामना) पर आधारित होती हैं।

बिस्मिल्ला खाँ के अनुसार, बिस्मिल्ला खाँ सदैव खुदा से एक अच्छे सुर की माँग करते थे जिसे सुनकर, सुनने वालो की आँखो मे अनगढ आँसू आ सके।

खुदा से (ईश्वर से) नियमित व सच्चे मन द्वारा की गई प्रार्थना सफल हुई व उनका शहनाईवादन अत्यन्त सुरीला व मीठा बन गया जिससे उन्हे संगीत के क्षेत्र मे ही नही बल्कि अन्य क्षेत्रो मे भी सफलता मिली।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	12.	

यह कथन बिल्कुल सत्य है कि बच्चे बचपन मे निर्दोष, निर्भय व मस्त होते है, उन्हें परिणाम की चिंता नही होती है।

बच्चे बचपन मे निर्दोष होते है क्योंकि वे जो भी दोष करते है व उनके भोलेपन व चंचलता से होता है न कि उनके स्वार्थपूर्ति के लिए। वे सदैव अपने स्वभाव को बनाए रखते है। माता का आँचल कहानी के अनुसार भोलेनाथ व उसके साली बचपन को एक प्रेरणा से जीते है वे जो भी गलती (दोष) करते है वह स्वभाविक होती है जैसे:- मूसन तिवारी को चिढाना, बूढे वर को अपमानित करना इत्यादि।

यह भी सत्य है कि बच्चे बचपन मे निर्भय होते है क्योंकि वे तो अपनी गतिविधियो के अंतर्गत व्यस्त रहते है उन्हें भय नही होता है क्योंकि वे यह नही जानते कि "उन्हे किससे डरना चाहिए व क्यो?"
माता का आँचल पाठ के अनुसार बच्चे बचपन मे साँप के बिल मे पानी उलीचते है, मकई के खेत मे घुस जाते है क्योंकि वे निर्भयी होते है।

यह तो एकदम सत्य है कि बच्चे बचपन मे मस्त होते है क्योकि उन्हे न तो किसी का डर होता है और न ही किसी का भय।
माता का आँचल कहानी के अनुसार बच्चे बचपन।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मे मस्त होकर खेलते हैं। मकई के खेत मे घुस्ते है व सौंप के बिल मे पानी उलीचते हैं।

इस बात की सत्य पुष्टि है कि बच्चो को परिणाम की चिन्ता नही होती है क्योकि वे किसी घटना के आगामी परिणाम को समझ ही नही पाते हैं।

माता का आँचल कहानी के अनुसार बच्चे सौंप के बिल मे पानी उलीचते है, मकई के खेत मे घुस्ते है तो उन्हे परिणाम की चिन्ता नही होती।

3. (क) 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी मे भारत सरकार की देशद्रोही मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है। वे अपनी नाक की न सोचकर जार्ज पंचम की नाक की चिन्ता करते हैं। वे जार्ज पंचम की नाक को वापस लगवाने के लिए पानी की तरह पैसा बहाते हैं।

वे अंग्रेजो की फिर से स्तुति करते है व उन्हे भारत की शान कहते हैं। वे भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी अंग्रेजो की चापलूसी करते हैं।

(ख) मन काव्यमय हो उठा, सत्य व सौन्दर्य को छूने लगा यह कथन लेखिका मधु कांकरिया ने सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल (सप्तभगिनी झरने) को देखकर कही। लेखिका ने सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

को देखकर ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि यह दृश्य लेखिका को मंत्रमुग्ध करने वाला लगा। इस दृश्य को देखकर लेखिका के मन मे प्रकृति के सौन्दर्य व अद्भुत छटा को निखारने लगी। इस दृश्य को देखकर लेखिका का मन काव्यमय हो उठा। इस झरने से पानी निरंतर गिर रहा था जो लेखिका को एक गीत साना-साना हाथ जोडि की याद दिला रहा था।

13. (ग) टुन्नु के मारे जाने पर दुलारी ने गंभीर प्रतिक्रिया की। दुलारी की आँखो से आँसू आ गये। उसने लड़के से रोते हुए टुन्नू की मौत का कारण पूछा।

इसके बाद वह एक गीत गाने लगी :- एही ठैया झुलनी हेरानी हो रामा जिसका प्रतीकार्थ यह है कि मेरे नाक की नथ खो गई है अब मैं यह किससे पूछु।

इसका प्रकार दुलारी टुन्नू की मौत पर व्यथित हो उठी।

कृपया आगे देखे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

14. "सड़क सुरक्षा"

(क)

दुपहिया वाहन चलाते समय निम्न बातो का ध्यान रखना चाहिए :-

(i) सदैव दुपहिया चलाते समय हेल्मेट अनिवार्य रूप से पहनना चाहिए।

(ii) वाहन की निर्धारित सीमा से अधिक गति (Speed) मे दुपहिया नही चलानी चाहिए।

(iii) शराब या नशीले पदार्थो का सेवन करके कभी भी ड्राइविंग नही करनी चाहिए।

(iv) तीन से अधिक सवारी नही होनी चाहिए।

(v) P.U.C., R.C., ड्राइविंग लाइसेंस जैसे कागज सदैव साथ होने चाहिए।

(vi) कभी भी ओवरटेकिंग नही करनी चाहिए।

(ख) अच्छे नागरिक होने के नाते दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की सहायता :-

(i) उसे प्राथमिक उपचार देना चाहिए व रोगी की हालत गंभीर हो तो अस्पताल मे भर्ती कराना चाहिए।

(ii) उसके परिजनो को सूचित करना चाहिए।

(iii) हमे LIC एजेंट व अन्यो को भी सम्पर्क करना चाहिए

(iv) यदि उसके शरीर से रक्त निकला रहा हो तो रोकना चाहिए।

(v) पुलिस व एम्बुलेंस को भी सूचित करना चाहिए.

P.T.O.

अतिक्रमण नियंत्रित करने के संदर्भ में कार्यकारी अधिकारी को पत्र :-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

4.

सेवामें,
श्रीमान सुरेन्द्र जी,
नगर निगम कार्यकारी अधिकारी,
भरतपुर

विषय :- सड़को पर बढ रहे अतिक्रमण को नियंत्रित करने के संदर्भ मे।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत मैं आपको हमारे नगर मे बढते हुए अतिक्रमण के संदर्भ मे नागरिक करना चाहता हूँ। नगर की सड़को पर दुकानो, कई लोगो, व्यापारियो, तांगावालो ने अतिक्रमण कर रखा है। जब कोई उनसे इसके विषय मे कहता है तो वे मारपीट व लड़ाई - झगड़ा करने लगते हैं। नगर के, वे लोग जिनके घर उनके नजदीक है उन्हे भी उनके साथ समस्या से गुजरना पड़ता है। इस कारण से वाहनो, पैदल - यात्रियो को अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ता है। कई बार तो दुर्घटनाएँ भी हो जाती हैं।

अतः आपसे सविनय निवेदन है कि शीघ्र - अतिशीघ्र इस अतिक्रमण को हटाने का प्रयास करे।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप यथोचित प्रयास करेगें।

सधन्यवाद

दिनांक :- 12/03/2016

भवदीय
अविनाश
(आदर्श कॉलोनी)

"पर्यावरण संरक्षण : हमारा दायित्व"

परीक्षार्थी उत्तर

3. उत्तर 3.

रूपरेखा :-

(i) पर्यावरण : जीवन का मूल आधार
(ii) पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व
(iii) पर्यावरण प्रदूषण के दुष्परिणाम
(iv) जन चेतना : हमारा दायित्व
(v) उपसंहार

(i) पर्यावरण : जीवन का मूल आधार =>

पर्यावरण दो शब्दो 'परि व आवरण' से मिलकर बना है 'परि का अर्थ है चारो ओर व आवरण का अर्थ है घेरा' अत: पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारो ओर का घेरा। पर्यावरण वह कारक है जिसके कारण कोई जीव जीवित रह पाता है।

पर्यावरण जीवन का मूल आधार है क्योंकि पर्यावरण के कारण ही जीवन संभव है। पर्यावरण सभी जीवधारियो को जीवित रखता है। पर्यावरण उन समस्त गैसो का मिश्रण है जो पृथ्वी के वायुमंडल मे उपस्थित है। पर्यावरण के बिना किसी भी जीवधारी का जीवित रहना असंभव है।

पर्यावरण मे वे वनस्पतियाँ (पेड-पौधे भी शामिल है जो मानव-जीवन के लिए परमावश्यक है। मानव जीवन के अंतर्गत पर्यावरण व अन्य जीवधारियो के अंतर्गत पर्यावरण जीवन का मूल आधार है क्योंकि पर्यावरण मे जल व वायु भी शामिल है। पर्यावरण उन समस्त जैव व अजैव घटको का सम्मिश्रण है जिससे कोई जीव जीवित रह पाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

3.

(ii) पर्यावरण संरक्षण का महत्व :-

पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक है क्योंकि पर्यावरण जीवन का मूल आधार हैं। पर्यावरण के द्वारा ही कोई जीवधारी जीवित रह पाता है। पर्यावरण ही वह कारक है जो जीवधारी को पोषण प्रदान करता है व उसे भोजन के द्वारा वृद्धि देता है। पर्यावरण संरक्षण का निम्न कारणों से भी जीवन मे अधिक महत्व है :-

(i) पर्यावरण मे जल शामिल है जिसके बिना जीवन संभव नही हैं।

(ii) पर्यावरण मे ऑक्सीजन व अन्य गैसे शामिल है जिनके बिना जीवन संभव नही हैं।

(iii) पर्यावरण मे वे जीव शामिल है जो दूसरो जीवो को पोषण देते हैं।

(iv) पर्यावरण मे वे सभी अजैव घटक शामिल है जिनके बिना जीवन संभव नही हैं।

(v) पर्यावरण मे मिट्टी, सूर्य का प्रकाश, हवा इत्यादि शामिल है जो आवश्यक है।

(vi) पर्यावरण मे पेड़-पौधे शामिल है जो दूसरो के पोषक हैं।

धन्यवाद

परीक्षार्थी उत्तर

(iii) पर्यावरण प्रदूषण के दुष्परिणाम:-

कई ऐसे घटक भी है जो पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। इनमें मानव की शोषणात्मक प्रवृत्ति सर्वप्रमुख है। पर्यावरण प्रदूषण के दूषित होने के दुष्परिणाम निम्न है:-

(i) विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिकी तंत्र, आहार/खाद्य श्रृंखलाएँ व जाल नष्ट हो रहे है जो जीवो के लिए चिंताजनक है।

(ii) पर्यावरण प्रदूषण से मानव का जीवन दूभर हो गया है।

(iii) पर्यावरण प्रदूषण के कारण विभिन्न प्रकार के जलीय - जीवो की मौत हो रही है।

(iv) पर्यावरण - प्रदूषण के कारण विभिन्न अजैव चक्रो को हानि हो रही है।

(v) पर्यावरण - प्रदूषण से जन- धन- मन तीनो की हानि हो रही है।

(vi) पर्यावरण - प्रदूषण से वर्तमान समय की पीढी व भविष्य पीढी दोनो को ही हानि हो रही है।

(vii) पर्यावरण प्रदूषण के कई अन्य दुष्परिणाम भी है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) जन चेतना: हमारा दायित्व :-

पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए जन-चेतना की महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं।
अधिक से अधिक जन चेतना / जन जागरूकता से ही पर्यावरण प्रदूषण को रोकना संभव हैं। जन चेतना के लिए पर्यावरण व उसके महत्व के बारे मे जन-२ को बताना चाहिए। पर्यावरण के महत्व को जानने से ही वे पर्यावरण प्रदूषण रोकने मे अपनी भूमिका निभा सकते हैं। पर्यावरण - प्रदूषण के विषय मे जन- रैली, आंदोलनो, सभाओ के माध्यम से जन - चेतना विकसित की जा सकती हैं।

(v) उपसंहार :-

बढते हुए पर्यावरण - प्रदूषण को रोकना आज की मूलभूत आवश्यकता हैं। पर्यावरण-प्रदूषण से बचने के लिए जन-चेतना की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण हैं।
यदि पर्यावरण - प्रदूषण रोकने के क्षेत्र मे प्रतिबद्धता रहेगी तो सफलता अवश्य मिलेगी।

X — समाप्त — X — X —